Edit with WPS Office

पंजाब स्कूल शिक्षा विभाग
द्वारा निर्धारित
अक्तूबर - नवंबर पाठ्यक्रम के अनुरूप

कक्षा:दसवीं	विषय:हिंदी
पाठ:अहसास(लघुकथा)	लेखक:ऊषा ० आर ० शर्मा

अहसास

(ऊषा ० आर ० शर्मा)

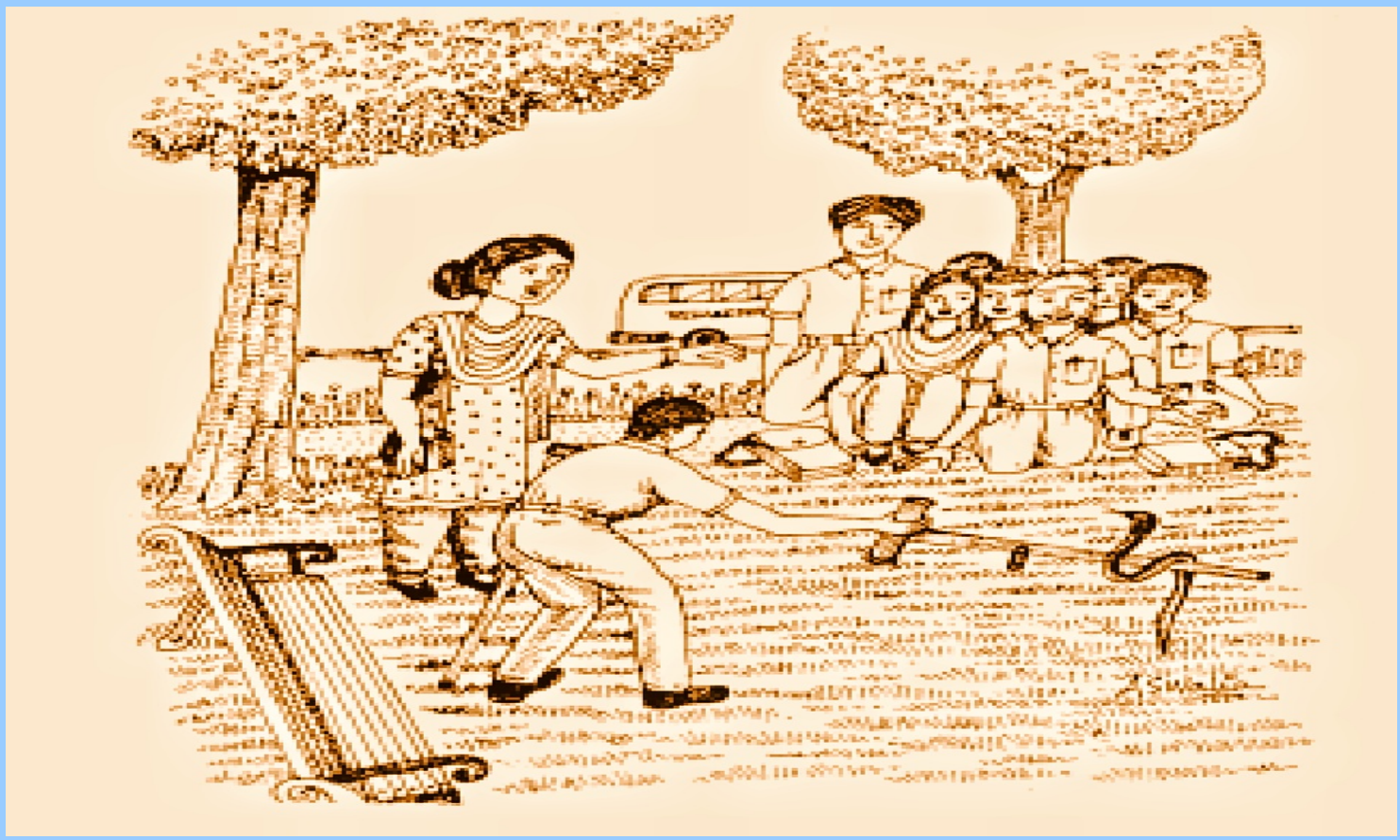

Edit with WPS Office

कठिन शब्दों के अर्थ

अहसास - महसूस करना। भ्रमण - घूमना। फौरन - तुरंत। आसमां : आसमान दिक्कत- परेशानी। अचानक- सहसा। पीठ थपथपाना = शाबाशी देना। निगाह - नज़र ,दृष्टि। कमाल = एक दम अलग , अनोखा । प्रात : कालीन -सुबह का समय । प्राचार्य = प्रिंसिपल । चेहरे का रंग उड़ना = डर जाना । सम्मानित करना = आदर - सम्मान देना । पुरस्कृत करना- पुरस्कार देना । रिफ्रैंशमेंट - खाने के लिए कुछ देना । विकट - कठिन । सौहार्दपूर्ण व्यवहार : अच्छा एवं मधुर व्यवहार । रवाना होना - चले जाना । अन्ताक्षरी = एक प्रकार का संगीत से जुड़ा हुआ मनोरंजक खेल । शैक्षिक भ्रमण - शिक्षा संबंधी भ्रमण के लिए विद्यार्थियों का जाना ।

अभ्यास के प्रश्नों के उत्तर

(क) विषय - बोध

प्रश्न 1. स्कूल बस पर छात्र - छात्राएँ कहाँ जा रहे थे ?

उत्तर -- स्कूल बस पर छात्र - छात्राएँ शैक्षिक भ्रमण के लिए रोज़ गार्डन जा रहे थे ।

प्रश्न 2. छात्राएँ बस में क्या कर रही थीं ।

उत्तर - छात्राएँ बस में अंताक्षरी खेल रही थीं ।

प्रश्न 3. दिवाकर बस में बैठा क्या देख रहा था ?

उत्तर - दिवाकर बस में बैठकर खिड़की के बाहर वृक्षों को

तथा दूर तक फैले आसमान को देख रहा था ।

प्रश्न 4. दिवाकर को अपने मन में अधूरेपन का अहसास क्यों होता था ?

उत्तर - दिवाकर अपाहिज था और दूसरे बच्चों की भाँति उछल कूद नहीं पाता था । इसलिए उसे अपने मन में अधूरेपन का अहसास होता था ।

Edit with WPS Office

प्रश्न 5. कार्यक्रम के दौरान छात्र - छात्राएँ क्या देखकर डर गए ?

उत्तर - कार्यक्रम के दौरान छात्र - छात्राएँ साँप को देखकर डर गए ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन - चार पंक्तियों में दीजिए

प्रश्न 1. दिवाकर की नए स्कूल में किसने मदद की ?

उत्तर - दिवाकर पिता की ट्रांसफर होने के कारण गाँव के स्कूल से शहर आया था । वहाँ शहर के स्कूल में वह स्वयं को अधूरा समझ रहा था । उसकी शारीरिक अपंगता उसे दूसरों से अलग करती थी । वह न ही उनके साथ खेल- कूद कर पाता था और न ही भाग - दौड़ पाता था । ऐसे समय में उसकी अध्यापिका नीरू ने अपने स्नेहपूर्ण व्यवहार से उसका हौसला बढ़ाया तथा समय - समय पर उसकी मदद भी की ।

प्रश्न 2. दिवाकर बैंच पर बैठकर क्या सोच रहा था ?

उत्तर - जिस समय सभी बच्चे रोज़ गार्डन में खेल - कूद रहे थे । झूला - झूल रहे थे । उस समय वहीं पास में एक बैंच पर बैठा दिवाकर अपनी पुरानी यादों में खोया हुआ था । वह दो साल पहले की घटना को याद कर , उसी में खोया था । उसे याद आता है कि दो साल पहले जब वह अपनी बड़ी मौसी के घर दिल्ली गया था तब उसने वहाँ फन सिटी में कितना मज़ा किया । उस समय फन सिटी में कितना खेला - कूदा था । वहाँ उसने खूब मस्ती की थी । यही सब विचार , यादें उसके दिमाग में घूम रही थीं ।

प्रश्न 3.सांप को देखकर दिवाकर क्यों नहीं डरा ?

उत्तर- शहर में आने से पहले दिवाकर गाँव के स्कूल में पढ़ता था । वहाँ उसने खेतों में कई बार साँप और अन्य जानवरों को देखा था । उसके लिए साँप को देखना कोई नई और डर को बात नहीं थी । इसके साथ - साथ वह एक साहसी , निडर और कर्मशील बालक था । उसने अपनी सूझ - बूझ का परिचय देते हुए अपने विवेक और वैसाखी की सहारा लेकर सौंप को दूर फेंक दिया था ।

प्रश्न 4. दिवाकर ने अचानक साँप को सामने देखकर क्या किया ?

उत्तर - दिवाकर अचानक सौंप को देखकर तनिक भी घबराया नहीं जबकि अन्य छात्र -

Edit with WPS Office

छात्राएँ डर के मारे काँप रहे थे । किसी को कुछ सूझ नहीं रहा था । ऐसे में दिवाकर ने बड़े ही धीरज से काम लिया । उसने बिना डरे और घबरा अपनी वैसाखी से साँप को उठाकर दूर फेंक दिया ।

प्रश्न 5. दिवाकर को क्यों पुरस्कृत किया गया ?

उत्तर - दिवाकर को जब उसको साँप को बैसाखी से दूर फेंकने संबंधी वीरता , साहस एवं सूझ - बूझ के लिए प्रातः कालीन सभा में प्राचार्य महोदय द्वारा सम्मानित किया गया तो उस समय वह स्वयं को अधूरा अथवा अपाहिज न समझकर स्वयं को पूर्ण समझ रहा था । अब उसे दूसरों को देखकर स्वयं में कोई कमी का अहसास नहीं हो रहा था ।

प्रश्न 6. लघुकथा अहसास ' का उद्देश्य क्या है ?

उत्तर : - 'अहसास' एक सामाजिक लघुकथा है । इसमें लेखिका ने एक बालक को शारीरिक चुनौतियों का सामना करते हुए दिखाया है । लेखिका प्रायः यथार्थ की पृष्ठभूमि पर अपनी कहानियों की रचना करती हैं । मानवतावाद का समर्थन करना ही उनका प्रमुख उद्देश्य रहा है । उनकी लघु कथा ' अहसास ' शारीरिक चुनौतियों का सामना करने वाले बच्चों में आत्म - विश्वास जगाने वाली एक प्रेरणादायक लघुकथा है । लेखिका का विचार है कि समाज में शारीरिक अक्षमता को किसी की कमी न समझकर उसका हौसला बढ़ाना चाहिए । अपनी लघुकथा में लेखिका उद्देश्य को स्पष्ट करने में पूर्णतया सफल रही है ।

प्रश्न 7. ' अहसास ' नामकरण की सार्थकता स्पष्ट करो ।

उत्तर - कहानी का शीर्षक प्राय : कहानी के मूलभाव तथा उसकी प्रभावोत्पादक शक्ति का परिचायक होता है । शीर्षक सम्पूर्ण कहानी का निचोड़ होता है । यह कहानी की मूलभावना का प्रतीक होता है । प्रस्तुत कहानी का शीर्षक ' अहसास ' है । यह शीर्षक अत्यंत आकर्षक , भावपूर्ण तथा जिज्ञासामय है । कहानी में दिवाकर जब प्रात : कालीन सभा में प्राचार्य द्वारा सम्मानित होता है तो उसे स्वयं में पूर्णता का अहसास होता है । उसके नीरस जीवन में सरसता का संचार हो जाता है । उसके मन का बदला यह भाव और अहसास ही कथा का शीर्षक बना है । इस प्रकार लघुकथा का शीर्षक उपयुक्त तथा अनुकूल है । सारी लघुकथा शीर्षक ' अहसास ' से ही जुड़ी है तथा केंद्रित भी है ।

(ख) भाषा - बोध

Edit with WPS Office

1. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण शब्द बनाएँ-

खामोश - खामोशी

व्यवहार = व्यावहारिक

सम्मान = सम्मानित

बहादुरी = बहादुर

रंग - रंगीन

हिम्मत = हिम्मती

II . निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ समझाकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

डर जाना =चेहरे का रंग उड़ जाना=अपने कमरे में साँप को देखते हो रुचि के चेहरे का रंग उड़ गया था।

पीठ थपथपाना= शाबाशी देना = पापा ने अनुज के परीक्षा में अंकों को देख पीठ थपथपाई थी ।

जान में जान आ जाना= राहत महसूस करना =उस अँधेरी रात में घर पहुँच कर हम सबकी जान में जान आ गई।

धन्यवाद

Edit with WPS Office

मार्गदशक:	लेखन एवं संकलन:	संशोधन:
डॉ.सुनील बहल असिस्टेंट डायरेक्टर व स्टेट रिसोर्स पर्सन (हिंदी व पंजाबी) शिक्षा विभाग,पंजाब	पवन कुमार हिंदी शिक्षक सरकारी सी. से. स्कूल लोहका,तरनतारन	नीतू बाला हिंदी शिक्षिका सरकारी सी. से. स्कूल लोहका,तरनतारन

मार्गदर्शक

श्री सुनील बहल
असिस्टेंट डायरेक्टर व स्टेट रिसोर्स पर्सन
(हिंदी व पंजाबी)
शिक्षा विभाग,पंजाब

लेखन एवं संकलन :
पवन कुमार
हिंदी शिक्षक
सरकारी सी०से०स्कूल, लोहका,
तरनतारन

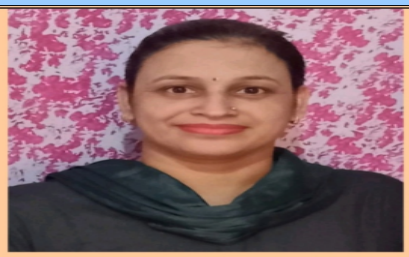

संशोधन:
नीतू बाला
हिंदी शिक्षिका
सरकारी सी. से. स्कूल,लोहका,
तरनतारन